ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-1* February- 2019
Innovation The Research Concept

माध्यमिक स्तर पर छात्रों की अपेक्षा छात्राओं के श्रेष्ठ परीक्षा परिणामों के कारणों का समीक्षात्मक अध्ययन

दीपा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
बी0एड0 विभाग,
अभिनव सेवा संस्थान महाविद्यालय,
कानपुर

सारांश

वैदिक युग में शिक्षा को अत्याधिक महत्व दिया जाता था । आर्यो का विश्वास था कि शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो सकता है। शिक्षा को प्रकाश का स्रोत माना गया है। ज्ञान से मनुष्य के अन्तर्चक्षु खुल जाते हैं ।

पूर्व वैदिक काल में बालकों के समान बालिकाओं को भी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था उनका उपनयन भी हाता था वे ब्रम्हचर्य का पालन करतीं थीं।

मुख्य शब्द : वैदिक काल, शैक्षिक स्थिति।

प्रस्तावना

वैदिक युग में स्त्रियों की शैक्षिक स्थिति को स्पष्ट करते हुए नीरा देसाई ने कहा है– ''शिक्षा के विषय में लड़कियों तथा लड़को में कोई अन्तर नहीं किया जाता था।''

लेकिन कालक्रम में हमारी संस्कृति के इस महत्वपूर्ण अंग पर कुठाराघात किया है। असंगठित होने के कारण हम पर बार–बार विदेशी आक्रमण होने लगे फलतः जान–माल व इज्जत सभी खतरे में पड़ गये जिससे बालिकाओं की स्वतन्त्रता पर रोक लग गयी जिससे बाल विवाह जैसी कुप्रथा ने जन्म लिया । स्त्री–शिक्षा तो प्रायः लुप्त हो गयी। धीरे–2 समाज में ये धारणा बन गयी कि स्त्रियों का कार्यक्षेत्र घर गृहस्थी संभालने व बच्चों को जन्म देने तक ही सीमित है । फलतः सीता व सावित्री के देश में स्त्रियाँ पूजित होने के बजाय अपमानित होने लगी ।

1854 के वुड घोषणा पत्र एवं 1882 के भारतीय शिक्षा आयोग की सिफारिश पर एवं 1904 के लार्ड कर्जन के शिक्षा प्रस्ताव पर सभी वर्ग की बालिकाओं के स्वतन्त्र विद्यालयों की स्थापना की गयी । आर्य समाज, ब्रह्म समाज थियासोफिकल सोसायटी जैसी सुधार वादी समाजसेवी संस्थाओं ने भी बालिका शिक्षा के प्रसार में योगदान दिया । सन 1959 में गठित राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद के सुझाव पर एवं 1962 गठित ''हँसा मेहता समिति'' के सुझाव पर सन 1964–66 कोठारी आयोग एवं नयी शिक्षा नीति 1986 के सुझाव पर भारत सरकार ने बालिकाओं के लिए छात्रावासों का निर्माण कराया साथ ही खेल के मैदानो की व्यवस्था की गयी । पत्राचार पाठ्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था की गयी एवं 11 से 14 वर्ष की 37 प्रतिशत बालिकाओं के शिक्षित करने का लक्ष्य रखा ।

विगत चार वर्षो के रिजल्ट देखने से ज्ञात हुआ कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं के परीक्षा परिणाम उन्नत रहे हैं । बालिकाओं का परीक्षा परिणाम अधिक होने के कारण ही ये प्रश्न उठा कि हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा परिणाम में बालिकाओं के परीक्षा परिणाम उन्नत आने के कारण क्या हो सकते हैं एवं बालकों के पिछड़ने के क्या कारण हो सकते है इसीलिए इस विषय को शोध हेतु चयन किया गया ।

अध्ययन का उद्देश्य

1. शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा में छात्र–छात्राओं के परीक्षा परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा में छात्रों की अपेक्षा छात्राओं के श्रेष्ठ परिणाम आने के कारणों का ज्ञात करना ।

परिकल्पना

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा में छात्र–छात्राओं के परीक्षा परिणाम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा में छात्रों की अपेक्षा छात्राओं के श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम आने के कारणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

न्यादर्श

न्यादर्श हेतु कानपुर जिले के अर्न्तगत आने वाले 5 शासकीय एवं पांच अशासकीय विद्यालयों के परीक्षा परिणामों की चयनित किया गया ।

उपकरण

शोध अध्ययन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

शोध विधि

वर्णनात्मक विधि के अर्न्तगत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि

मध्यमान, मानक विपलन एवं क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

बालक एवं बालिकाओं के परीक्षा परिणाम के कारण सम्बन्धी परिणाम जानने के लिए शिक्षक प्रष्नावली पर आधारित निम्न तालिका का प्रयोग किया गया।

तालिका

प्र0		हाँ		नहीं	
		आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत
1–	बालिकायें, बालकों की अपेक्षा नियमित रूप से गृहकार्य करके लाती है।	15	75	05	25
2–	बलिकाओं में बालकों की अपेक्षा कार्य का व्यवस्थित एवं स्पष्ट ढंग से करने की प्रवृत्ति पायी जाती है ।	16	80	04	20
3–	बालिकाओं के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अधिक योजनायें संचालित हैं ।	20	100	00	00
4–	बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की औसत उपस्थिति अधिक होती है ।	17	85	03	15
5–	बालकों की अपेक्षा बालिकायें अधिक अनुशासित रहती हैं ।	19	95	01	06
6–	कक्षा में बालिकायें ध्यानपूर्वक विषय वस्तु समझती हैं।	13	65	07	35
7–	बालिकाओं में विषय–वस्तु के चिन्तन की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है	15	75	05	25
8–	आपके विद्यालय में वार्षिक परीक्षा के पहले की जाने वाली जांच परीक्षा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से ली जाती है।	18	90	02	10
9–	आपके विद्यालय में वार्शिक परीक्षा के पूर्व होने वाली जांच परीक्षा बोर्ड पैटर्न पर होती है ।	16	80	04	20
10–	आपके द्वारा कक्षा में पढ़ाते समय छात्र–छात्राओं से प्रश्न पूछे जाते हैं।	20	100	00	00

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि प्र0क्र0–1 के अनुसार 75 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि बालिकायें बालकों की अपेक्षा नियमित रूप से गृह कार्य करके लाती है जबकि 25 प्रतिशत मानते हैं कि बालिकायें नियमित रूप से गृहकार्य करके नहीं लाती है । प्र0क्र0–2 के अनुसार 80 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि बालिकाओं में बालकों की अपेक्षा कार्य का व्यवस्थित एवं स्पष्ट ढंग से करने की प्रवृत्ति नहीं पायी जाती है । जबकि 20 प्रतिशत शिक्षक मानते हैं कि बालिकाओं में बालकों की अपेक्षा कार्य का व्यवस्थित एवं स्पष्ट ढंग से

करने की प्रवृत्ति नहीं पायी जाती है। प्र0क0–3 के अनुसार 100 शिक्षकों का मानना है कि बालिकाओं के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अधिक योजनायें संचालित हैं । प्र0क0–4 के अनुसार 85 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि कक्षाओं में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की औसत उपस्थिति अधिक होती है जबकि 15 प्रतिशत शिक्षक मानते हैं कि कक्षाओं में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की औसत उपस्थिति अधिक नहीं होती है प्र0क0–5 के अनुसार 95 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि बालकों की अपेक्षा बालिकायें अधिक अनुशासित रहती है जबकि 05 प्रतिशत शिक्षक मानते हैं कि बालकों की अपेक्षा बालिकायें अधिक अनुशासित नही रहती हैं ।

प्र0क0–6 के अनुसार 65 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि बालिकायें कला में ध्यान पूर्वक विषय वस्तु को समझती है जबकि 35 प्रतिशत शिक्षक मानते हैं कि कक्षा में बालिकायें ध्यान पूर्वक विषयवस्तु को नहीं समझती है प्र0क0–7 के अनुसार 75 शिक्षकों का मानना है कि बालिकाओं में विषयवस्तु के चिन्तन की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है, जबकि 25 प्रतिशत शिक्षक मानते हैं कि बालिकाओं में विषयवस्तु के चिन्तन की प्रवृत्ति अधिक नहीं पायी जाती है। प्र0क0–8 के अनुसार 90 प्रतिशत शिक्षकों का कहना है कि उसके विद्यालय में वार्षिक परीक्षा के पहले ली जाने वाली जांच परीक्षा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से ली जाती है, जबकि 10 प्रतिशत शिक्षक कहते हैं कि उनके विद्यालय में वार्षिक परीक्षा के पहले ली जाने वाली जांच परीक्षा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से नहीं ली जाती है। प्र0क0–9 के अनुसार 80 प्रतिशत शिक्षकों का कहना है कि उनके विद्यालय में वार्षिक परीक्षा के पूर्व होने वाली जांच परीक्षा बोर्ड पैटर्न पर नहीं होती है। प्र0क0–10 के अनुसार 100 प्रतिशत शिक्षकों का कहना है कि उनके द्वारा कक्षा में पढ़ाते समय छात्र–छात्राओं से प्रश्न पूछे जाते हैं ।

निष्कर्ष

परीक्षा परिणाम सम्बन्धी निष्कर्ष–

1. शासकीय व अशासकीय दोनो विद्यालयों के बालकों की अपेक्षा बालिकाओं का परीक्षा परिणाम श्रेष्ठ पाया गया ।
2. श्रेश्ठ परीक्षा परिणाम आने के कारणों सम्बन्धी निष्कर्ष (शिक्षकों के अनुसार) बालिकायें, बालकों की अपेक्षा नियमित रूप से गृहकार्य करके लाती है ।
3. बालिकाओं में बालकों की अपेक्षा कार्य को स्पष्ट एवं व्यवस्थित रूप से करने की प्रवृत्ति पायी जाती है ।
4. बालिकाओं के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अधिक योजनायें संचालित हैं ।
5. बालकों की अपेक्षा बालिकायें अधिक अनुशासित, लगनशील, परिश्रमी होती हैं।
6. कक्षा में बालिकायें ध्यान पूर्वक विषय वस्तु को समझती हैं ।
7. बालिकाओं में विषय वस्तु के चिन्तन की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *भटनागर, डा0 सुरेश : आधुनिक भारतीय शिक्षा व उसकी समस्यायें मेरठ पब्लिसिंग हाउस मेरठ ।*
2. *कपिल, डा0 एस0के0 : सांख्यिकी के मूल तथ्य, विनौद पुस्तक मन्दिर*
3. *राय, पारस नाथ : अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा ।*
4. *श्रीवास्तव, डा0 डी0एन0 (2005) मनोवैज्ञानिक और शिक्षा में सांख्यिक विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा ।*
5. *बाघेला, डा0 हेत सिंह (2005) ''शिक्षा मनोविज्ञान'' राजस्थान प्रकाशन जयपुर।*